Anveshan (अन्वेषण): A Multidisciplinary Journal in Hindi
Vol. 1, Issue 1 - 2017

भारत में पर्यटनः एक ऐतिहासिक सर्वेक्षण

गुमानसिंह मुझाल्दा*, आशुतोष पाण्डे*

शोध सार (Abstract)

विदेशी पर्यटकों के लिए भारत में अनेक आकर्षण है। विगत पंद्रह सोलह वर्षों मे विदेशी पर्यटकों की संख्या मे 80 प्रतिशत की वृद्धि हुई फिर भी अभी और वृद्धि की संभावना है। परंतु इसमें हमारे सीमित साधन बाधक हैं। जिसके कारण यहाँ पर्यटकों के ठहरने के स्थान, परिवहन, मनोरंजन आदि की सुविधाएं बहुत अधिक नहीं बढ़ाई जा सकती हैं किन्तु, संगठित प्रयास करके कम से कम समय में उसे दूर किया जा सकता है। सरकार की ओर से कोलकाता, मुम्बई, वाराणसी, उदयपुर, बंगलौर तथा अन्य महत्वपूर्ण स्थानों मे होटलों के निर्माण और विस्तार की योजना है। भारत में मेलों और त्योहारों की प्राचीन परंपरा रही है। विदेशी पर्यटक इन्हें देखने को लालायित रहते है अंतरराष्ट्रीय पर्यटन वर्ष में इनका आयोजन पर्यटकों के लिए विशेष रूप से आकर्षक रहा। केरल का ओणम, चेन्नई का पोंगल, मैसूर का दशहरा, गुजरात का नवरात्रा, राजस्थान का गणगौर, कलकत्ता की दुर्गा पूजा, दिल्ली की होली, आदि देश के विभिन्न भागों में मनाए जाने वाले ऐसे त्योहार हैं।

प्रस्तावना

भारत ने, विश्व के पर्यटन मानचित्र पर अपना विशेष स्थान बना लिया है। क्योंकि देश में सर्वत्र फैले पर्यटक स्थलों की विविधता के प्रति पर्यटकों को आकर्षित करने की उनमें अपार सामर्थ्य है। फिर भी हम अपने पड़ोसी देशों जैसे चीन, सिंगापुर, मलेशिया और थाईलैण्ड से अब भी पीछे हैं।, भारत ने विश्व के पर्यटन मानचित्र पर अपना विशेष स्थान बना लिया है। क्योंकि देश में सर्वत्र फैले पर्यटक स्थलों की विविधता के प्रति पर्यटकों को आकर्षित करने की उनमें अपार सामर्थ्य है। फिर भी हम अपने पड़ोसी देशों जैसे चीन, सिंगापुर, मलेशिया और थाईलैण्ड से अब भी पीछे है। राजस्थान सरकार ने पर्यटक आकर्षण रखने वाले नये स्थानो, जो कि अब तक पर्यटन द्वारा अछूते हैं, पर छोटे वायुयानों के लिये हवाई पट्टी का निर्माण करने का प्रस्ताव रखा है। हिमाचल प्रदेश आने वाले वर्षों में पर्यटक राज्य के रूप में उभरने की उम्मीद करता है। उसने मण्डी जिले के सुन्दरनगर में अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा बनाने का प्रस्ताव रखा है। कुल्लू, कांगड़ा और शिमला हवाई अड्डों का बड़े वायुयानों के लिये विस्तार और पहले से ही विद्यमान 55 हैलीपेडों के साथ अपने आभ्यांतर क्षेत्र संयुक्त करने के लिये प्राइवेट रूप से

*शोधार्थी, राजनीती विज्ञान, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर, मध्य प्रदेश।
Correspondence E-mail Id: editor@eurekajournals.com

© Eureka Journals 2017. All Rights Reserved.

संचालित हैलीपेड, टैक्सी सेवाओं का विस्तार उसके अन्य सुझाव हैं। पर्यटक उद्गम और गंतव्य के स्थानों के बीच पुल का काम करता है। यह, अपने पर्यटक स्थानों तक पहुंच प्रदान करके, क्षेत्रों को बाहर के लिए खोल देता है। इसके बिना पर्यटन के संसाधन चाहे जितने भी आकर्षक और सुख–सुविधाओं से युक्त हों, किसी लाभ के नहीं हो सकते हैं। हम किसी एक क्षेत्रा में परिवहन प्रणाली को संगठित किये बिना, पर्यटन के नियोजन की बात नहीं कर सकते हैं।

इस प्रणाली के अंतर्गत, मार्गों का जाल या परिवहन के साधनों और परिवहन का तन्त्र आता है। पहले वर्ग में हवाई तथा समुद्री मार्ग आते हैं। अंतर्देशी मार्गों मे सड़कें और रेल मार्ग आता है। परिवहन के रूप वायुयान, जहाज, स्टीमर, कारें, टैक्सी, आरामदायक गाड़ियां, बसें, और रेलगाड़ियां आती हैं।

टैक्सी, कारें, ऑटोरिक्शा, तांगा, मोपेड, साइकिल और ट्राम विशेष रूप से स्थानीय परिवहन के रूप में महत्वपूर्ण हैं। यह शहर में यात्रियों को हवाई अड्डो, बसस्टैंडों, या रेलवे स्टेशनों से होटलों और पर्यटक स्थलों तक लाने के लिये होते हैं। अधिक ऊंचाइयों पर पर्यटक क्षेत्रों में, शायद आप को रस्सी मार्ग और बिजली चालित ट्रॉलियां, टट्टू या तांगा सवारी और पाल नावें मिल जाएंगी।

मानव की प्रकृति सदियों से पर्यटनवादी प्रकृति रही है। इतिहास इस बात का साक्षी है। पर्यटनवादी होने का प्रमुख कारण है मानव का प्रकृति से अथाह प्रेम और उसका यायावर होना। आगे बढ़ते कदम, कही अपने पीछे छोड़े कदम के निशान पूर्वजों की धरोहर के प्रति उसको सहेजने की ललक में उसे खोजी तथा भ्रमणशील बना दिया।

प्रकृति के प्रति मानव रुझान सहज है क्योंकि प्रकृति का सौन्दर्य विभिन्न स्थानों की अलग–अलग पहचान देता है कही बर्फ से ढकी वादियाँ, ऊँचे–ऊँचे पहाड़, नदियाँ, जल प्रपात, उगता डूबता सूरज, रंग–बिरंगी बिखरती किरणें, समुद्र की उठखेलियाँ करती लहरें सभी हमें प्रकृति नें बिखरी–बिखरी मिलती हैं।

अतः इन सभी को देखते हो इनके बारें में जानने के लिये मानव हमेशा ही लालायित रहा है। इसके लिये उसने अपनी जान तक जोखिम मे डालकर लम्बी–लम्बी यात्राएं भी प्रारंभ किया है।

मानव ने अपनी सभ्यता, संस्कृति की ऐतिहासिक धरोहर के प्रति जानकारी हासिल करना पुरातत्वीय खोज कर पूवजों द्वारा बनायी गई ऐतिहासिक धरोहरों की न केवल जानकारी प्राप्त करना बल्कि उन्हें उसी तरह समेंट कर अपनी भावी पीढ़ी को सोपनें की जिम्मेंदारी को निभातें हुए अपनी प्राचिन संस्कृति के प्रति उनकी जिज्ञासा को बढ़ाया और संघर्षमयी मानव को अपनी सभ्यता संस्कृति कि पहचान से अवगत कराया है।

यही पर्यटनवादी प्रकृति कि विशेषताएँ रही है भारत के संन्दर्भ में पर्यटन कि बात करे तों भारत की सभ्यता और संस्कृति की विशेषताओं नें विदशी पर्यटकों को भारत में आने हेतु आकृष्ट किया है। मैक्स मुलर ने कहा था "भारत का प्राकृतिक सौन्दर्य देखने लायक है"– भारत का स्वर्ण है। भारत चिंतकों तथा बुद्धिजीवियों का देश है। भारत में पर्यटन यहाँ की ऐतिहासिक धरोहर के कारण विकसित हुआ। चीन के ह्वानसंगा मेगस्थनीज ने भी भारत की संस्कृति दर्शन के बारे में अपनी पुस्तक इण्डिका में लिखा था।

© Eureka Journals 2017. All Rights Reserved.

महत्व

अपने भिन्न पहलुओं की देखभाल तथा पर्यटन के संचालन के लिए बड़ी संख्या में प्रशिक्षित सहायक कर्मचारी वर्ग की जरूरत होती है। इसमें प्रशिक्षित टुअर गाइड, ट्रेवल एजेन्ट या टुअर ऑपरेटर, परिचारक, खानसामा और उनके अन्य कई सहायक शामिल हैं। इनमें से, टुअर गाइड और टुअर ऑपरेटर संचालन कर्मचारी वर्ग के मुख्य कार्मिक होते हैं। पर्यटकों के यात्रा के पूर्व नियोजन से लेकर पर्यटकों के वापस रवाना होने तक टुअर गाईड उनके साथ जुड़ जाते हैं। उनकी सतत आपूर्ति पर्यटक उद्योग के विस्तार के साथ साथ बनाए रखनी होती है ताकि पर्यटकों के दीर्घकालिक व आरामदेय वास सुनिश्चित कर सकें।

पर्यटन जैसे संवेदनशील सेवा उद्योग का चलना मुख्य रूप से उनके कौशल पर निर्भर करता है। पर्यटकों के साथ फलदायक अंतक्रिया उनके कौशल पर निर्भर करती है। यदि वे अनुपस्थित रहते हैं या सही–सही भूमिका अदा करने में असफल रहते हैं तो पर्यटकों का आना कम हो जाता है। उसे लोकप्रिय बनाने के बड़े विज्ञापन अभियान के बावजूद यह उद्योग नष्ट होने के कगार पर पहुँच सकता है। पर्यटक गंतव्यों पर उनका कार्य होटल के मालिकों और पेशेवर होटल प्रबन्धक के कार्य के समान होता है।

निष्कर्ष

पर्यटकों के आगमन से स्थानीय स्तर पर विभिन्न रोजगारों के अवसर प्राप्त होंगे, कुशल व अकुशल दोनों प्रकार के रोजगार में वृद्धि होगी। पर्यटकों द्वारा खर्च किया जाने वाला धन भारतीयों की उन्नति में अहं भूमिका निभायेगा। भारतीयों को पर्यटन के क्षेत्र में मालदीव से प्रेरणा लेनी चाहिए। मालदीव में पर्यटन ही प्रमुख उद्योग हैं। वे पूरी तरह इस पर निर्भर होटलों के लिए यह अनिवार्य और अपरिहार्य है।

संन्दर्भ ग्रंथ सूची

[1]. भारत पर्यटन विभाग की वेबसाइट।
[2]. राजेश गोयल पर्यटन के सिद्धांत।
[3]. कुरूक्षेत्र, हंस पत्रिका 2/36 अंसारी रोड़ दरियागंज, नई दिल्ली।
[4]. कादम्बिनी 18–20 कस्तूरबा गाँधी मार्ग, नई दिल्ली।
[5]. अहा जिदंगी–6 द्वारिका सदन, प्रेस काम्प्लेक्स एम.पी. नगर भोपाल 462011.
[6]. मधुमती–राजस्थान साहित्य अकादमी, सेक्टर 4, उदयपुर।
[7]. पत्रिका–केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय पश्चिमी खण्ड 7 रामकृष्ण पुरम् नई दिल्ली।
[8]. भारत यात्रा तीर्थ, एवं दर्शनीय स्थल–डॉ. उषा अरोडा।

© Eureka Journals 2017. All Rights Reserved.